ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -2| July - Dec 2025

शोध भूमि

शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका

Page No. : 444-454

राष्ट्रीयता और हिंदी साहित्य

डॉ विजय लक्ष्मी
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग)
एकलव्य यूनिवर्सिटी, दमोह (उच)
फोन न. 8171428066
Email—vijyalaxmi7084@gmail.com

शोध सारांश

राष्ट्रीयता का संबंध भावना से होता है। मानव हृदय में अनेक भावनाएं होती हैं परन्तु राष्ट्रीयता की भावना स्वार्थ से परे एक उच्च भावना है। यह एक ऐसी भावना है जो ईश्वरीय भक्ति भावना और वात्सल्य भावना की तरह व्यक्ति को निजी स्वार्थो से उठाकर निस्वार्थ भावना के उच्च सिंहासन पर बैठा देती है, जिस पर आसीन होकर व्यक्ति के हृदय में देश प्रेम की भावना देश की उन्नति की आकांक्षा और उसके अतीत और वर्तमान पर गर्व की भावना जाग्रत रहती है। राष्ट्रीयता कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे हम देख सकें, बल्कि उसका संबंध उस आत्मिक और मनोवैज्ञानिक भावना से है जिसे हम सिर्फ महसूस कर सकते हैं। इसी कारण इसको परिभाषा बद्ध करना कठिन है। प्रस्तुत शोध पत्र में राष्ट्रीयता की परिभाषादेते हुए राष्ट्रीयता के प्रमुख तत्व, भारत में राष्ट्रीयता का उदय, साहित्य एवं राष्ट्रीयता,एवं हिंदी में राष्ट्रीय साहित्य की परम्परा का विश्लेषण किया गया है।

शब्द कुंजी—राष्ट्रीयता, सह—अनुभूति, समानता, आध्यात्मिक, राजनैतिक, स्वायतता।

राष्ट्रीयता की परिभाषा—

लास्की के अनुसार " कोई ऐसे मापक तत्व नहीं हैं जिनके आधार पर राष्ट्रीयता की परिभाषा दी जाए।"1

किन्तु फिर भी राष्ट्रीयता के स्वरूप को निर्धारित करने के लिए परिभाषाओं का सहयोग लेना आवश्यक है।

डॉ सुधीन्द्र के अनुसार —"व्यक्ति के भाव, विचार और क्रिया व्यापार तथा राष्ट्र के हित, कल्याण और मंगल की भावना और चेतना राष्ट्रवाद है।"2

डॉ विजयेंन्द्र स्नातक के अनुसार— "जब हम अपने सुख दुख को देश की फैली हुई सीमाओं में व्याप्त देखने लगते हैं, हमारे स्वार्थ का विस्तार हो जाता है और हम अपने गांव नगर, प्रान्त या

प्रदेश की सीमाओं का अतिक्रमण कर देश या राष्ट्र तक अपने को फैला हुआ पाते हैं, यहीं से हमारे भीतर राष्ट्रीयता का उदय होता है।"3

डॉ गुलाब राय के अनुसार– "एक सम्मिलित राजनीतिक ध्येय से बंधे हुए किसी विशिष्ट भौगोलिक इकाई के जन समुदाय के पारस्परिक सहयोग और उन्नति की अभिलाषा से प्रेरित उस भू भाग के लिए प्रेम और गर्व की भावना को राष्ट्रीयता कहते हैं।"4

अलफ्रेड जिर्मन के अनुसार–"राष्ट्रीयता मेरे लिए नितांत राजनीतिक प्रश्न नहीं है। मूलतः और आवश्यक रूप से यह एक आध्यात्मिक प्रश्न है, राष्ट्रीयता धर्म के समान आत्म परक मनोवैज्ञानिक, मन की एक दशा, आध्यात्मिक सम्पत्ति और अनुभव करने, विचार करने एवं जीवित रहने की पद्धति है।"5

डॉ अम्बेडकर के शब्दों में दृ " राष्ट्रीयता श्रेणीगत चेतना की एक अनुभूति है, जो एक ओर तो उन व्यक्तियों को जिनमें यह इतनी प्रगाढ़ होती है कि आर्थिक संघर्ष या समाज गत उच्चता दृ नीचताके कारण उत्पन्न होने वाले भेद भावों को दबाकर एक सूत्र में बांधे रखती है और दूसरी ओर उनको ऐसे लोगों से प्रथक करती है जो उस श्रेणी के नहीं हैं।"6

हेराल्ड लास्की के अनुसार – जिसके द्वारा उन सभी में एक विशिष्ट एकता उत्पन्न हो जाती है, जो अपने को अन्य मानवों से भिन्न मानते हैं। यह एकता इतिहास, विजयों अथवा परम्पराओं में समानता का परिणाम होती हैं। जिसकी प्राप्ति प्रयत्नों के फल स्वरूप हुई हो।"7

जॉन स्टुअर्ट मिल के अनुसार– "पारस्परिक सह– अनुभूति द्वारा संबंध मानव समुदाय, जो स्वेच्छा से अन्य लोगों को बजाय आपस में सहयोग करते हो राष्ट्रीयता का निर्माण करते हैं। अनुभूति की समानता ही उन्हें अन्य वर्ग के लोगों से प्रथक करती है। वे एक ही शासन के अंतर्गत रहने की इच्छा करते हैं जिसका संचालन भी वे स्वयं करना चाहते हैं।"8

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर राष्ट्रीयता की कोई निश्चित परिभाषा बना पाना कठिन है।मगर इतना अवश्य स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रीयता विशिष्ट मानव समूह के हृदय की वह चेतना है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने निजी स्वार्थो से हटकर सम्पूर्ण राष्ट्र के सुख, समृद्धि एकता में अपने आप को गौरवान्वित अनुभव करता है उसकी अखंडता में ही अपने हित की कामना करता है। राष्ट्रीयता की भावना का रूप निश्चेष्ट नहीं है अपितु यह अत्यंत तीव्र एवं व्यापक है इसमें डूब कर मानव देश के कल्याण के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर रहता है। मिल के प्रशासन की`उंदजं, डॉक्टर अंबेडकर ने जातीय एकता, हेराल्ड लास्की ने राष्ट्रीय एकता के स्वरूप का निर्धारण सांस्कृतिक एकता के आधार पर किया। इन सभी विद्वानों ने मुख्य रूप से अपनी परिभाषाओं का आधार एकता की भावना को ही बनाया और राष्ट्रीयता को एक भावना ही माना है। वस्तुतः राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने वाले तत्वों का विभिन्न राष्ट्रओं के संदर्भ में समान रूप से महत्वपूर्ण होना अनिवार्य नहीं है। फिर भी राष्ट्रीयता के स्वरूप के स्पष्टी करण के लिए इन तत्वों के सापेक्षिक महत्व का विवेचन अपेक्षित है।

राष्ट्रीयता के प्रमुख तत्व – राष्ट्रीयता के स्वरूप के स्पष्टीकरण के लिए विद्वानों ने कुछ तत्वों का होना अनिवार्य बताया है इनमें से प्रमुख है भौगोलिक एकता जातीय एकता, भाषागत एकता, धार्मिक एकता, राजनीतिक आकांक्षा की एकता ऐतिहासिक लक्ष्यगत एकता और सांस्कृतिक एकता।

रेमजेम्योर ने सात तत्वों की चर्चा की है। भौगोलिक एकता भाषा गत एकता धर्म की एकता प्रशासन की एकता आर्थिक एकता तथा परम्परा की एकता।"9

राष्ट्र की एकता के लिए इन सभी तत्वों का समान रूप से महत्वपूर्ण होना आवश्यक नहीं है परंतु राष्ट्रीयता के स्वरूप के विश्लेषण के लिए इनके महत्व को स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है।

1. भौगोलिक एकता–मानव समूह में राष्ट्रीयता की भावना के जागरण के लिए विशिष्ट और निश्चित भूभाग का होना अत्यंत आवश्यक है एक ही भौगोलिक सीमा के अंतर्गत रहने से लोगों में एक दूसरे के प्रति तथा उस भूभाग के प्रति प्रेम और निष्ठा की भावना उत्पन्न हो जाती है इसी प्रेम और निष्ठा की भावना के कारण हम भूमि को माता के रूप में मानने लगते हैं। अथर्ववेद में इस बात का समर्थन किया गया हैकृ "माताभूमिरूपुत्रो अहं पृथिव्यारू।"10 भौगोलिक एकता राष्ट्रीय निर्धारण का मुख्य और आवश्यक तत्व है इसके अभाव में अन्य तत्व व्यर्थ हो जाते हैं। डॉ चंद्र प्रकाश आर्य भी इस बात का समर्थन करते हैं उनके अनुसारकृराष्ट्र की भूमि ही राष्ट्रीयता के उद्भव का सुदृढ़तम आधार है।"11

निज भूमि के अभाव में सर्व सम्पन्न जाति भी राष्ट्रीय भाव को नहीं प्राप्त कर सकती है । श्री अरविन्द के अनुसारकृ"देश की राष्ट्रीयता की प्रतिष्ठा भूमि है, जाति नहीं, धर्म नहीं है, और कुछ भी नहीं है एक मात्र देश है और जितने भी राष्ट्रीयता के उपकरण हैं वे सब गौण और उपयोगी है, देश ही मुख्य और आवश्यक है।"12 इसके अतिरिक्त मानव की सहानुभूति का विस्तार भी बड़ी कठिनाई से हो पाता है पास में रहने वाले लोगों में स्नेह और आत्मीयता की भावना का विकास धीरे–धीरे अपने आप हो जाता है,अतः मानव के सहज भावनाओं के जागरण के लिए भौगोलिक इकाई ही सर्वश्रेष्ठ है। मैजिनी के अनुसार हमारा देश हमारा घर है वह घर जो ईश्वर ने हमें दिया है,जिसमें उसने अनेक परिवार रखे हैं, जो परिवार हमें प्यार करते हैं और जिन परिवारों को हम प्यार करते हैं एक ऐसा परिवार जिसके साथ दूसरों की अपेक्षा हम अधिक तत्परता से सहानुभूति रखते हैं और जिसे हम दूसरों की अपेक्षा अधिक सरलता से समझ पाते हैं।"13 इस प्रकार राष्ट्रीयता के निर्धारण में इस तत्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। भौगोलिक एकता ही राष्ट्रीयता की भावना को मूर्त रूप प्रदान करती है।

जातीय एकता राष्ट्रीयता के तत्व निर्धारण में जातीय एकता का भी महत्व कम नहीं है। एक ही जाति के लोगों में आपसी प्रेम और सौहार्द अधिक होता है एक ही जाति के होने के कारण उनके रीति रिवाज मान्यताएं और रहन–सहन का ढंग भी एक ही होता है जिससे आपस में प्रेम और सौहार्द होना स्वाभाविक है।शूमैन और जिर्मन ने जातीय एकता को महत्वपूर्ण तत्व माना है,परंतु वर्तमान युग में विश्व के किसी भी भाग में ऐसी कोई जाति नहीं है जो शुद्ध हो वे कहीं ना कहीं किसी न किसी जाति के सम्मिश्रण से बनी है।

प्रो. जोसेफ के अनुसारकृराष्ट्रीयता जातीयता को चीरकर पार निकल जाती है।"14 परन्तु हम देखें तो एक ही जाति के लोगों में आपस में प्रेम अन्य जातियों के प्रेम की अपेक्षा अधिक प्रगाढ़ होता है। वर्तमान समय के जातीय संघर्ष जो विश्व के हर कोने में हो रहे है, इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। परन्तु राष्ट्रीयता के समक्ष जातीय एकता का तथ्य नगन्य रह जाता है, क्योंकि विपत्ति काल के समय उसका सामना सम्पूर्ण राष्ट्र एकजुट होकर करता है। उस समय परस्पर जातीय भेद समाप्त हो जाता है।

एल. फ्रेडरिक शूमैन के अनुसारकृ" लोग राष्ट्र धर्म तथा आर्थिक बंधनों को काल्पनिक जातीय समूहों के बंधन की अपेक्षा अधिक तत्परता से स्वीकार करते हैं।"15

भाषागत एकताकृ भाषागत एकता राष्ट्रीयता निर्धारण का महत्वपूर्ण आधार है। भाषा ही विचार विनिमय का साधन है। राष्ट्रीय भाषा राष्ट्रीयता की भावना और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाती है। "भाषा राष्ट्रीय आत्मा की वाणी है" भाषा और संस्कृति का परस्पर संबंध हमेशा जुड़ा रहता है। जो साहित्य उस भाषा में लिखा जाता है वह भविष्य में आने वाली पीढ़ी के लिए गौरवशाली अंग बन जाता है।

डी. इवोड्यूसेक के अनुसार– "राष्ट्रीय संस्कृति के विकास तथा राजनीतिक आत्म निर्णय की प्राप्ति कर राष्ट्र के निर्माण के लिए भाषा का पुनरुद्धार और गौरवान्वित सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन माना गया है।" 16 फिर भी यदि हम भाषागत एकता को राष्ट्रीयता माने तो ऐसा तत्व नहीं है। उदाहरणार्थ हम अपने देश को ही ले हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की भाषा बोली जाती है फिर भी यहाँ के निवासियों में राष्ट्रीय भावना विद्यामान है। अमेरिका तथा कनाडा में एक ही भाषा अंग्रेजी बोली जाती है फिर भी वे अलग अलग राष्ट्र हैं। अतः भाषा गत एकता का महत्व असंदिग्ध होने पर भी अनिवार्यता मान्य नहीं है। जे. एच. सी. हेज के अनुसार–"विद्वानों तथा साधारण जनों को यह बात समान रूप से स्पष्ट होनी चाहिए कि राष्ट्रीयता का सर्वाधिक असंदिग्ध चिन्ह भाषा है।"17

धार्मिक एकता– धर्म का व्यक्ति पर अत्यधिक प्रभाव होता है धर्म का मनुष्य की भावना संसार आचार विचार पर सीधा प्रभाव पड़ता है प्राचीन काल से ही धर्म मनुष्य के जीवन पर हावी रहा है धर्म के आधार पर ही राष्ट्रओं का गठन हुआ है धार्मिक समानता होने पर परस्पर प्रेम और निष्ठा का भाव सहज ही उत्पन्न हो जाता है और धार्मिक असमानता होने पर यही भाव देश की एकता के लिए खतरा बन सकता है यदि हम अपने देश की वर्तमान समस्या पर विचार करें तो हमें धर्म का महत्व सहज ही पता चल जाएगा। हमारा देश धर्मनिरपेक्ष है परंतु फिर भी हिंदुओं की अधिकता के कारण हिंदू धर्म का प्रभाव ही अधिक रहा है। आज यही धर्मनिरपेक्ष सिद्धांत हमारे देश के लिए खतरा बन गया है जबकि अन्य राष्ट्र जो धार्मिक रूप से एक ही धर्म में आस्था रखते हैं उनकी एकता की भावना अधिक सुदृण है आज विभिन्न राष्ट्रों के बीच चल रहे युद्ध अधिकतर धार्मिक भावना से ही प्रेरित हैं।अतः जहां धर्म का आधारभूत अंतर पाया जाता है जैसा कि इस्लाम और ईसाइयत में है वहां अन्य बातों के समान होने पर भी राष्ट्रीय एकता सुदृण और स्थाई नहीं हो पाती। आज संपूर्ण विश्व में विज्ञान और शिक्षा के प्रसार से मनुष्य के विचारों में परिवर्तन आ रहा है और वह राष्ट्र की एकता के समक्ष धार्मिक संघर्षों को तुच्छ समझ रहा है। विभिन्न देशों में धार्मिक सहिष्णुता का अनुसरण किया जा रहा है धर्म से प्रेरित संघर्षों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निपटाने का प्रयास किया जा रहा है अतः वर्तमान समय में धार्मिक एकता को राष्ट्रीयता निर्धारण का आवश्यक तत्व नहीं माना जाता है फिर भी यह तत्व देश की अखंडता को चुनौती देने में सक्षम है।

राजनीतिक आकांक्षा की एकताकृराजनीतिक आकांक्षा की एकता का तात्पर्य है एक ही प्रशासन सूत्र में बंधे रहने की भावना है।

गिलक्राइस्ट के अनुसार– "राष्ट्रीयता के निर्माण के लिए एकता के जितने प्रकार आवश्यक हैं उनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण राजनीतिक एकता ही है।"19

राजनैतिक एकता राष्ट्रीयता की भावना को सुदृढ़ बनाती है प्रत्येक देश के देश वासियों की यह प्रबल आकांक्षा होती है कि उनका एक स्वतंत्र राष्ट्र हो जिसमे उनका शासन हो भारत के नागरिकों की राजनैतिक आकांक्षा स्वतंत्रता के पश्चात ही पूर्ण हुई। अमेरिका को राष्ट्र रूप प्रदान करने वाला तत्व राजनैतिक आकांक्षा की एकता ही है।

प्रो. रोज के अनुसार– "राजनैतिक एकता को ही राष्ट्र की संज्ञा प्रदान की है।"20

राजनैतिक आकांक्षा की एकता राष्ट्रीयता का क्रियात्मक रूप है इसलिए इस तत्व के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है।

ऐतिहासिक लक्ष्य गत एकता – अपने प्राचीन गौरवमय इतिहास पर गर्व

प्रत्येक राष्ट्र के मानव के हृदय में होता है जो गौरवमय कार्य हमारे पूर्वजों ने किया वो वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत होते हैं।

डॉ गुलाब राय के अनुसार – प्राचीन काल की गौरव गाथाएं हमको अपने भविष्य निर्माण के लिए प्रेरणा और स्फूर्ति देती हैं।"21 अतीत यदि हमें प्रेरणा और स्फूर्ति देता है तो भविष्य हमारे लक्ष्य का रूप है। यदि हमारा लक्ष्य समान है तो हमारे प्रयत्न की दिशा भी समान होगी। जिससे आपस में सहयोग की भावना में वृद्धि होगी।

एडवर्ड मैकनॉल बर्न के अनुसार –सामान इतिहास एवं भविष्य के लिए समान आकांक्षाएं अथवा सामान भागों में विश्वास विभिन्न वर्ग के लोगों में एक्य भावना का संचार करने वाले प्रबल तत्व है।"22 इसलिए ऐतिहासिक लक्ष्यगत एकता राष्ट्रीयता के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

सांस्कृतिक एकता– सांस्कृतिक एकता राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण तत्व है संस्कृति के अंतर्गत रीति–रिवाज, रहन सहन, कला साहित्य, शिक्षा सभी का समावेश हो जाता है। सांस्कृतिक मूल समान होने पर वाह्य विभिन्नता के बावजूद हृदयगत भावना समान होती है भारतीय संस्कृति में अनेकता में एकता प्राचीन काल से ही विद्यमान है। अलग–अलग प्रदेशों में निवास करने पर भी हमारे देश के नागरिकों को संस्कृति कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में एकता के सूत्र में बांधती है। इस प्रकार सांस्कृतिक एकता राष्ट्रीयता का आधार है।

भारत में राष्ट्रीयता का उदय –

प्रथम चरण – भारत में राष्ट्रीयता की भावना का विकास आधुनिक युग में ही विकसित हुआ। लेकिन कुछ विद्वान भारत में राष्ट्रीयता की भावना का प्रसार अति प्राचीन काल से मानते हैं। मातृ भूमि और जन्मभूमि के प्रति प्रेम की यह भावना प्राचीन काल से ही हमारे देश में थी मगर इसका क्षेत्र इतना व्यापक नहीं था जितना आधुनिक युग में हुआ प्राचीन काल में हमारी जन्मभूमि हमारी मातृभूमि सिर्फ हमारा गांव ही था संपूर्ण भारतवर्ष को जन्म भूमि मानना हमने पश्चिम से ही सीखा हमारी संस्कृति में एकता होने पर भी हमारे देश में विज्ञान और यातायात की उन्नत साधन न होने के कारण राष्ट्रीयता की भावना का विकास नहीं हो पाया साथ ही साथ हमारे देश की भौगोलिक स्थितियां भी हमारी राष्ट्रीयता के प्रचार में बाधक थी हमारे देश में मौर्य मुगल गुप्त आदि सम्राटों ने राजनीतिक एकता स्थापित की थी परंतु उनकी विजय स्थाई ना होने के कारण राष्ट्रीयता का विकास नहीं हो पाया। भारतीय जनता जब विदेशियों के हाथ में जकड़ गई तब उसमें भारत को

एक नई इकाई के रूप में देखने की भावना जागृत हुई। पश्चिमी शिक्षा के प्रसार और वैज्ञानिक साधनों के विस्तार के फल स्वरुप विचारों का विनिमय सरल हो गया जिसके कारण राष्ट्रीयता की भावना का विस्तार व्यापक होने लगा आर्थिक और राजनीतिक रूप में तो असंतोष तो फेल ही रहा था सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा इसे और हवा मिल रही थी सन 1828 ईस्वी में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज सन 1837 ईस्वी में महादेव गोविंद रानाडे ने प्रार्थना समाज सन 1870 ईस्वी में आर्य समाज के निर्माण में राष्ट्रीयता के विकास को गति प्रदान की इसके 11 वर्ष बाद स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की नींव डाली।अंततः देखा जाए तो यह काल एक सामूहिक जागरण का काल था। जिसने देश की जनता को अंग्रेजों के विरुद्ध संग्राम छेड़ने के लिए एकजुट होकर संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया जिससे राष्ट्रीयता की भावना को गति मिली ऐसी स्थिति में ही कांग्रेस का जन्म हुआ।

2. द्वितीय चरणकृ1885 ई. से 1905 ई. तक –

इस चरण में राष्ट्रीय भावना का चतुर्मुखी विकास हुआ जनता के हृदय में स्वराज प्राप्त की भावना उदित हुई और उसी की प्राप्ति में उसे अपने कष्टों का अंत दिखा। इस काल में लक्ष्य एक था जिसकी प्राप्ति के लिए संवेत प्रयास किया गया जिससे राष्ट्रीयता की भावना का चतुर्मुखी विकास हुआ। इसी काल में ए. ओ. ह्यूम नामक अंग्रेज व्यक्ति ने कांग्रेस की स्थापना की। कांग्रेस अधिकार प्राप्ति के लिए प्रश्न तो कर रही थी परंतु राष्ट्रीयता में उग्रभावना पैदा नहीं हो पा रही थी क्योंकि अब तक शासको के प्रति सम्मान का भाव व्याप्त था निःसंदेह द "इस युग में इंडियन नेशनल कांग्रेस राजभक्ति प्रदर्शित करती थी इसकी सुनिश्चित नीति नरम दल थी और भाषा निवेदनात्मक ही नहीं वरन् याचना पूर्ण थी तथापि उसने उसे युग में भारत वासियों में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने उन्हें एक सूत्र में बांधने और उनमें राष्ट्रीय और राजनीतिक जागृति फैलाने के लिए महत्वपूर्ण मौलिक काम किया था।"23

प्रारंभिक वर्षों में कांग्रेस ने ज्यादातर शासन सुधार संबंधी ही प्रस्ताव पारित किए। सन 1892 में कृषि सुधार संबंधी मांग सन 1892 ईस्वी में इंडियन काउंसिल एक्ट लागू हो गया जो कांग्रेस की मांगों के अनुकूल था परंतु प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं संबंधी मांग सन 1898 में भारतीय उद्योग धंधों के टूटने से भारतीय जनता पर आर्थिक मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा।

सन् 1899 और 1900 ई. के अकाल ने जनता की कमर और तोड़ दी यह काल 4 साल तक रहा इस मुसीबत ने आम जनता के हृदय में भी स्वराज के प्रति लालसा की भावना भर दी जिसने भी अंग्रेजों के प्रतिरोध दिखाए उसे जेल में डाल दिया गया।

अंग्रेजों ने लोकमान्य तिलक को बिना मुकदमा चलाएं जेल में डाल दिया। अकारण अन्याय होने से राष्ट्रीयता की भावना व्यापक होकर उग्र रूप लेने लगी इस काल में आध्यात्मिक नेताओं ने भी राष्ट्रीय चेतना को भी बढ़ाने में योगदान दिया विवेकानंद के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।उन्होंने राजनीति से हटकर जनता में आत्मविश्वास की ज्योति को जगाया।

3. तृतीय चरण–1905 ई. से 1918 ई. तक–

इस काल में राष्ट्रीयता की भावना ने एक क्रांति का रूप ले लिया था।अंग्रेजी की "फूट डालो और राज करो "की नीति का नग्न रूप जनता के समक्ष आ गया था परिणाम स्वरुप जनता में रोष की लहर तीव्र हो गई।इसी काल में राष्ट्रवाद में क्रांतिकारी एवं हिंसक गतिविधियां शामिल हुई।

अंग्रेजों की दमन नीति भी तीव्र होने लगी इसी काल में प्रथम विश्व युद्ध हुआ। क्रांति की लहर सारे विश्व में फैल रही थी।विश्व युद्ध के कारण भारत में वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि हुई। महायुद्ध के पश्चात सन 1921 ईस्वी में भारत में औद्योगिक मंदी भी आ गई जिससे कृषक वर्ग मजदूर वर्ग में असंतोष फैल गया हड़तालों और 1918 में चंपारण और खेड़ा के सत्याग्रह के रूप में प्रकट हुआ। अंग्रेजी सरकार ने जनता के असंतोष और राष्ट्रीयता के वेग को कम करने के लिए तरह–तरह के वायदे और उपाय किए मगर भारतीय जनता भी अंग्रेजों के झांसे में आने वाली नहीं थी क्योंकि उसके अंदर तो पूर्ण स्वराज प्राप्ति की भावना उद्दीप्त हो चुकी थी। इस काल में सामाजिक सुधार एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान का कार्य भी साथ–साथ चल रहा था।सन 1918 तक राष्ट्रीयता की भावना में सर्वस्व बलिदान की भावना का समावेश भी हो गया था।

चतुर्थ चरण–1919 ई. से 1930–34 ई. तक–

इस काल में राष्ट्रीय भावना सभी वर्गों में फैल चुकी थी अंग्रेजों के शोषण में वृद्धि होती जा रही थी। इसी काल में जलियांवाला बाग हत्याकांड एवं मार्शल लॉ के दमनकारी कार्यों से जनता भड़क उठी।गांधी जी के रूप में भारत को एक महान नेता मिला।जिसे भारत की संपूर्ण जनता ने स्वीकारा उन्होंने अहिंसावादी दृष्टिकोण के सहारे अंग्रेजों को एक श्वेत युग की चुनौती दी।साथ ही साथ भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद द्वारा हिंसात्मक कार्यवाहियां की गई। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था और जमींदारी प्रथा के शोषण के कारण जनता त्रस्त हो गई थी हर तरफ असंतोष के वातावरण ने संपूर्ण देश की जनता को एक सूत्र में बांधकर संघर्ष करने को प्रेरित कर दिया।1930 ई के स्वाधीनता के घोषणा पत्र में कहा गया है कि " अंग्रेजी सरकार ने भारतवासियों की स्वतंत्रता का अपहरण ही नहीं किया वरन उसका आधार भी गरीबों के रक्त शोषण पर है और उसने आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भारत वर्ष का नाश कर दिया है। अतः हमारा विश्व हमारा विश्वास है कि भारतवर्ष को अंग्रेजों से संबंध विच्छेद करके पूर्ण स्वराज या स्वाधीनता प्राप्त कर लेनी चाहिए।"24 इस प्रकार इस काल में स्वराज भावना दृढ़ हो गई थी।

पंचम चरण–

सविनय अवज्ञा आंदोलन ने अपने बिस्तार के फल स्वरुप देश में जागरूकता की भावना को व्यापक कर दिया था। किसान और मजदूर वर्ग पूर्ण रूप से राष्ट्रीयता की भावना से संचालित हो गया था। भारत में कई नए दल बन गए थे 1933 ईस्वी में ब्रिटिश सरकार ने संवैधानिक परिवर्तन के लिए कानून बनाया जिसके अंतर्गत दो मुख्य बातें थी। "प्रथम केंद्र में संघ शासन की स्थापना जो ब्रिटिश भारत के प्रांतो व देशी रियासतों को मिलकर बनाया जाएगा द्वितीय संघ की स्थापना हेतु प्रांतों को स्वायत्तता प्रदान करना।"25

कांग्रेस ने इसका विरोध किया क्योंकि इसमें भारतीयों की भागीदारी नाम मात्र थी। सन 1937 में कांग्रेस ने चुनाव में भाग किया और पंजाब बंगाल और सिंधु को छोड़कर आठ प्रांतो में अपने मंत्रिमंडल बनाये। इसी बीच का अंग्रेजों ने अपना अंतिम दांव फेंका जिसके परिणाम स्वरूप भारत में हिंदू एवं मुस्लिम मतभेद उत्पन्न हो गए। फल स्वरुप पाकिस्तान एक पृथक राष्ट्र बन गया किंतु अंग्रेजों का शासन स्थित न रह सका। और 1947 में भारत स्वतंत्र हो गया।

इस प्रकार राष्ट्रीयता की भावना विदेशी सत्ता के विरोध के रूप में प्रस्फुटित हुई। भारत में भौगोलिक और सांस्कृतिक एकता तो पहले से ही थी लक्ष्य की एकता स्वराज प्राप्ति के एक हो जाने से धीरे–धीरे भारत में राष्ट्रीयता का विकास हो गया।

साहित्य एवं राष्ट्रीयता– साहित्य में राष्ट्रीयता का तात्पर्य ऐसी रचनाओं से है जो राष्ट्र निर्माण एवं विकास के लिए जनमानस में उत्साह एवं प्रेरणा भर सके विभिन्न स्थितियों में इसके सृजन की दिशाएं भिन्न हो सकती हैं। पर तंत्र राष्ट्रों में एकता और समृद्धि की प्रेरणा के लिए साहित्य सृजन होता है। किंतु साहित्य पर केवल वर्तमान परिस्थितियों का ही प्रभाव नहीं पड़ता और ना ही ऐसा साहित्य जीवन पर्यंत के लिए अमरता प्राप्त करता है। द्विवेदी युग में रचा गया साहित्य तत्कालीन सत्याग्रह एवं आंदोलनो से प्रेरित था किंतु इन रचनाओं को अमरता नहीं प्राप्त हुई। उसकी चेतना समय के साथ–साथ समाप्त हो गई। संस्कृति में राष्ट्रीयता को व्यापक भूमिका देती है।

आचार्य नंद दुलारे वाजपेई के अनुसार दृष्राष्ट्रीयता की भावना देश और समाज की सांस्कृतिक जीवन में बहुमुखी पहेलियों का स्पर्श नहीं करती और एक बड़ी सीमा तक एकांगी बनी रहती है। कदाचित इसलिए बहुत समय तक और बहुत दूर तक राष्ट्रीय कविता नहीं की जा सकती। विश्व साहित्य में भी श्रेष्ठ किन्तु कोरी राष्ट्रीय कविताओं की संख्या थोड़ी है।"26

कोरी राष्ट्रीयता पर तत्कालीन परिस्थितियां ही प्रभाव डालती हैं।

आचार्य नंददुलारे वाजपेई की मान्यता है कि "किसी भी राष्ट्रीय आंदोलन के कतिपय पहलुओं का ज्यों का त्यों चित्रण कर देना कवि की भावना और कल्पना का अधूरा ही आयाम कहां जाएगा।"27 इसलिए शांतिप्रिय द्विवेदी का कथन हैकृ ॰ जिन कविताओं में सामाजिकता ही नहीं बल्कि चिरंतन संस्कृति शश्वत अनुभूति हैं। वे ही साहित्य की अचल संपत्ति हो सकती है।" किसी देश का साहित्य उसकी प्राकृतिक सामाजिक धार्मिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों के दर्पण के रूप में कार्य करता है इसीलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। प्राचीन काल में आज तक का रचित साहित्य यदि देखा जाए तो उस पर पूर्ण रूप से तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव है। यदि किसी जाति की संस्कृति का अवलोकन करना हो तो उसके साहित्य का अवलोकन अत्यंत अनिवार्य है। कभी अपने काव्य द्वारा क्षणिक नहीं शाश्वत सत्य का उद्घाटन करता है उसे इस बात की चिंता नहीं होती कि उसके संबंध संबंध में कौन क्या कहता है उसे तो वही कहना है और वही लिखना है जो मानवता का श्रृंगार बन सके। "रामायण और महाभारत में चित्रित वर्णन उस समय के सत्य का उद्घाटन करते हैं संस्कृति के समस्त अंगों का वर्णन हमारे साहित्य में होता है। हमारा वैदिक साहित्य भारत ही नहीं विश्व का सबसे प्राचीन लिखित साहित्य है "साहित्य संस्कृति का वाहक है और उसके अध्येता जो उसके सांचे में जीवन ढ़ालते हैं उस संस्कृ त के रक्षक हैं।यह अध्येता देश और काल का अतिक्रमण कर जाते हैं।यदि गोस्वामी तुलसीदास आर्य संस्कृति के अटल पुजारी हैं तो जर्मनी में उत्पन्न हुआ मैक्स मूलर भी इस संस्कृति का अनुपम भक्त कहा जा सकता है।गांधी और टॉल स्टॉय विभिन्न देशों में उत्पन्न होकर भी इस संस्कृपति के अनुयाई बन सकते हैं।"28

इस प्रकार यदि हम देखें तो साहित्य कवि के ह्रदय के अंतर से उत्पन्न हुआ है। जो संस्कृति का संदेश ही प्रसारित करता है संपूर्ण साहित्य संस्कृति का एक झंडा है। संस्कृत साहित्य से बहुत

प्राचीन ह। संस्कृति का जन्म मानव जन्म के समय ही हो गया था जबकि साहित्य का विकास संस्कृति के विकास या सभ्यता के प्रसार होने पर हुआ भारतीय साम्यवादी संस्कृति ही संसार की एक ऐसी संस्कृति है जिसने संसार की संस्कृतियों के प्रभाव को आत्मसात कर तो लिया है किंतु उसने अपनी गरिमा को कभी काम नहीं होने दिया। अनेकों काल के थपेड़े खाकर भी भारतीय संस्कृति ने अपना अस्तित्व बनाए रखा। जिन रचनाओं में सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आस्था होगी। सामान आदर्शों के आधार पर पारस्परिक सौहार्द भावना और सहयोग भावना के प्रसार का संदेश होगा, प्राचीन गौरव मय गाथाओं का स्मरण होगा। भावी नवनिर्माण के स्वप्नों की झलक होगी जिसमें विश्वास को वही साहित्य राष्ट्रीयता का प्रसार करने में समर्थ हो पाएगा और अनंत काल तक जीवित भी रह पाएगा अन्यथा काल के साथ—साथ में वह मिटता जाएगा इस प्रकार हम देखें तो साहित्य और राष्ट्रीयता का संबंध अटूट है।किसी देश की राष्ट्रीयता के संवाहक के रूप में साहित्य का बहुत बड़ा हाथ है। "साहित्य का युग से घनिष्ठ संबंध होता है।युग की प्रवृत्ति और प्रक्रिया की प्रतिक्रिया साहित्य पर बड़े वेग से होती है।अतः युग का प्रतिबिंब भी साहित्य में मिलता है।"

भारत में पुनरुत्थान की जो लहर 1857 की क्रांति के बाद उठी वह कालानुसार विभिन्न रूपों में साहित्य में अभिव्यक्ति पाती रही है भारतेंदु युग में राष्ट्रीयता का रूप सामाजिक एवं धार्मिक अधिक था। द्विवेदी युग में प्राचीन संस्कृति के पुनरूथान के रूप में था। इस प्रकार विभिन्न आंदोलनों द्वारा साहित्य प्रत्येक युग में राष्ट्रीयता का प्रसार करता रहा है। इन समस्त विवेचनों से स्पष्ट है कि साहित्य और राष्ट्रीयता का परस्पर संबंध अत्यंत घनिष्ठ है।

हिंदी में राष्ट्रीय साहित्य की परम्परा— परंपरा का अर्थ साहित्य क्षेत्र में उन आदर्शों रीतियों एवं स्थापनाओं से है जो पूर्ववर्ती साहित्यकारों से उतरवर्ती साहित्यकारों को प्राप्त होती रही है।परंपरा ही युग के साथ सम्मिलित होकर परवर्ती साहित्यकारों का मार्गदर्शन करती है। परंपरा हमेशा स्थितियों से प्रभावित होती रही है। तथा परिस्थितियां युग चेतना की पृष्ठभूमि होती है। अतः परंपरा और युग चेतना का आपस में गहरा संबंध है।साहित्य की परंपरा द्वारा ही युग चेतना प्रतिबिंबित होती है। भारत में हिंदी में राष्ट्रीय साहित्य की परंपरा इस प्रकारफलीभूत हुई इसका अध्ययन हम निम्न प्रसंगों में करेंगे

(क) आदिकाल— आदिकाल में राष्ट्रीयता का संकुचित रूप उपलब्ध होता है इस काल में शौर्य और पौरुष के होते हुए भी भारतीय दस्ता के दो रूप अपभ्रंश साहित्य और चारण साहित्य के रूप में उपलब्ध होते हैं। अभ्यास साहित्य में स्वयंभू पुष्पदंत कनकामर मुनि,हेमचंद्र, सारंगधर आदि राष्ट्रीय साहित्य की परंपरा को आगे बढ़ाया चारण काल में वीर काव्यों में चंद्रवरदाई,सिंह भट्ट श्रीधर आदि ने राष्ट्रीय साहित्य परंपरा को बढ़ाया परंतु उनकी राष्ट्रीयता जातीयता की सीमा नहीं लाँघ सकी और वे देश के उत्थान में सहायक नहीं हो सके।

(ख) भक्तिकाल — इस काल के साहित्य में धार्मिक भावना का आधिक्य था मुस्लिम शासको द्वारा जो धार्मिक शोषण इस काल में हुए उसके कारण निराश होकर लोगों ने ईश्वर की शरण ली।हिंदू मुस्लिम विद्वेष की आग ठंडी पड़ने पर धार्मिक कटटरता उत्पन्न हो गई।इस युग में कबीर जायसी और तुलसी ने समाज के विश्रंखल जीवन को दृढ़ता प्रदान कर धर्म के वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत किया है भक्त कवियों के यह प्रयास अद्वितीय हैं।

(ग) रीतिकाल – इस काल में जातिय राष्ट्रीयता का प्रादुर्भाव हुआ। इस काल में औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता के विरोध स्वरूप जातीय राष्ट्रीयता का प्रादुर्भाव हुआ। भूषण मान गोरेलाल चंद्रशेखर आदि ने राष्ट्रीय साहित्य के प्रसार में योगदान दिया परंतु उनका क्षेत्र व्यापक नहीं था। लेकिन "जो कार्य उन्होंने सीमित रूप में किया वह भी राष्ट्रीय भावों से प्रेरित होकर ही किया अतः राष्ट्रीय गौरव से खाली नहीं है।"29 इस काल के साहित्य में राष्ट्रीय कल्याण की भावना विद्यमान थी।

(घ) आधुनिक काल–

(अ) भारतेन्दु युग – इस काल का साहित्य भारतीय राजाओं के दरबारों से निकलकर जनसाधारण की ओर मुड़ा इस युग के साहित्य को सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण का साहित्य कह सकते हैं।"30 भारतेंदु हरिश्चंद्र इस पुनर्जागरण काल के सर्वप्रथम नाविक थे। यह संक्रांति का युग था। पुराने आदर्श और मान्यताएं ध्वस्त हो रही थी मगर नई स्पष्ट नहीं हो पा रही थी। मुद्रण काल के विकास के फल स्वरुप अनेकों पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ हो गया था। इस युग में जहां एक और अपनी संस्कृति और अपने धर्म दर्शन को पहचानने का प्रयास किया गया वहीं धार्मिक एवं सामाजिक सुधारकों ने भारत के गौरवमय अतीत को पुनः स्मरण करने की प्रेरणा भारतीय नवयुवकों ने भारत के गौरवमय अतीत को उस युग का कवि एवं साहित्यकार भारतीय संस्कृति प्रतिष्ठा के लिए दृढ़ संकल्पबद्ध हुआ औरहर प्रकार से राष्ट्रीय भावनाओं के प्रसारण में प्रयत्नशील रहा। इस युग में गद्य साहित्य के विकास का महत्व भी असाधारण है इस प्रकार निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि भारतेंदु युग में पुनर्जागरण की चेतना का व्यापक प्रभाव पड़ा और साहित्य और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नवीन चेतना एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हुआ हिंदी नाट्य साहित्य का विकास भारतेन्दु युग से ही हुआ।

(ब) द्विवेदी युग– द्विवेदी युगीन राष्ट्रीय साहित्य में अतीत के गौरवपूर्ण चित्रण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।जनजीवन का शायद ही कोई ऐसा पक्ष रहा होगा जिसमें इस युग में परिवर्तन नहीं हुआ भारतेंदु युग की युग चेतनाओं का विकास इस युग में पूर्ण रूप से हुआ अतः इसे हम सुधारवादी युग कह सकते हैं।खड़ी बोली का विकास इसी युग में हुआ इस कल के साहित्यकार राष्ट्र के उज्जवल भविष्य के प्रति आशावान थे। इस युग के प्रमुख कवि एवं लेखक मैथिली शरण गुप्त, प्रसाद आदि थे। जिन्होंने राष्ट्रीय साहित्य की गौरवपूर्ण परंपरा को आगे बढ़ाया इस युग के प्रमुख विषय देशभक्त वर्तमान दुरव्यवस्था पर क्षोभ,अतीत की भव्यता पर गर्व जन्मभूमि की सुषमा का गान जाति प्रेम राष्ट्रीय एकता आदि रहे हैं। इन साहित्यकारों ने जाति साहित्य और राष्ट्रीय तीनों की सेवा की है। यही सेवा भाव इस युग की प्रमुख चेतना का परिचालन है।

(स) स्वातंत्रयोत्तर युग– इस युग की राष्ट्रीय भावना में अपनी पूर्ववर्ती युगों की भावनाओं से मित्रता है। स्वतंत्रता से पूर्व परतंत्रता से छुटकारा ही राष्ट्रीयता की मुख्य भावना थी किंतु अब राष्ट्रीयता के अंतर्गत विकास की भावना प्रधान हो गई थी।इसी युग में साहित्य में वसुधैव कुटुंबकम की भावना का पदार्पण हुआ अखिल विश्व में शांति की अभिलाषा ही मुख्य धेय्य हो गया था।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य के सभी कालों में राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार एवं प्रचार रहा है।कवियों एवं लेखकों ने अपनी ह्रदयगत भावनाओं को उजागर करते हुए नई पीढ़ी को देशभक्त एवं राष्ट्रीयता का संदेश प्रसारित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. ए ग्रामर का पॉलिटिक्स ––– पृष्ठ, 2019
2. डॉ सुधींद्र –––––हिंदी कविता में युगांतर, पृ. 37
3. डॉ विजयेंन्द्र स्नातककृचिंतनके क्षण, पृ. 150
4. डॉ विजयेंन्द्र स्नातककृचिंतनके क्षण, पृ. 150
5. अलफ्रेड जिर्मन– नेशनलिटि एंड ग्वर्नमेंट पृ. 51
6. डॉ अम्बेडकर––– थॉट्स ऑन पाकिस्तानकृपृ. 25
7. हेराल्ड लास्की –––ए ग्रामर ऑफ पॉलिटिक्सकृपृ. 219
8. जॉन स्टुअर्ट मिल दृ यूटिलिटे रिएनीज्म लिवरटीएंड रिप्रजेंटिव गवर्नमेंट–पृ–359–360
9. रेमजेम्योरकृनेशनलिज्मएंड इंटर नेशनलिज्म––– पृ. 131
10. भूमि सूक्त, अर्थववेद दृ 12रू1रू12
11. डॉ चंद्र प्रकाश आर्यकृराष्ट्रीयताकी अवधारणा और पं. श्याम नारायण पाण्डेय का काव्य, पृ. 10
12. देव दत्तकृश्री अरविन्द का राष्ट्र का आवाहन, पृ. 66
13. डॉ विद्यानाथ गुप्तकृहिंदीकविता में राष्ट्रीय भावना, पृ. 11
14. बी. जोसेफ दृनेशनलिटी, पृ. 118
15. एल. फ्रेडरिक शूमैन दृइंटरनेशनल पॉलिटिक्स, पृ. 290
16. डी. इवो ड्यूसेक, नेशंस एंड मैन इंटरनेशनल पॉलिटिक्स टुडे पृ. 78
17. जे. एच. सी. हेजकृनेशनलिज्मरू ए रिलिजन, पृ. 3
18. आर एन गिल क्राइस्ट––– प्रिंसिपल्स साइंस, पृ. 30
19. आर एन गिल क्राइस्ट––– प्रिंसिपल्स साइंस, पृ. 31
20. जे एच रोज
21. डॉ गुलाब रायकृराष्ट्रीयता, पृ. 12
22. एडवर्ड मैकनाल बर्नकृआइडियासइन कॉनफिलिक्ट, पृ. 4
23. गुरुमुख निहाल सिंह दृ लैंडमार्क्स इन इंडियन कॉन्स्टीट्यूशनलएंड नेशनल डेवलपमेंट, पृ. 115
24. तीतारमैया पट्टामिरूकांग्रेस का इतिहासकृपृ. 228
25. विलियम रॉय स्मिथ–––नेशनलिज्म एंड रिफार्म इन इंडियाकृपृ. 424
26. नंद दुलारे वाजपेईरू आधुनिक साहित्यकृपृ. 27
27. नंद दुलारे वाजपेईरू कवि निरालाकृपृ.कृ163
28. समीक्षात्मक निबंध, संग्रह, संस्कृति साहित्य एवं कला मुंशी राम शर्मा,'सोम'कृडॉविद्या चौहान, पृ. 88
29. डॉ विद्या नारायण गुप्तरू हिंदी कविता में राष्ट्रीय भाषा, पृ. 188
30. राम गोपाल सिंहरू भारतेन्दु साहित्य, पृ. 9